एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 05, अंक: 06 (नवम्बर-दिसम्बर, 2025)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

प्राकृतिक खेती में फसल सुरक्षा के उपाय

*लाल पंकज कुमार सिंह[1], जितेन्द्र कुमार कुशवाहा[2] एवं चंदन सिंह[2]
[1]वि.व.वि. (फसल सुरक्षा), कृषि विज्ञान केन्द्र, अमेठी
[2]वि.व.वि. (उद्यान विज्ञान), कृषि विज्ञान केन्द्र, मऊ
[3]वि.व.वि. (मृदा विज्ञान), कृषि विज्ञान केन्द्र, चंदौली
*संवादी लेखक का ईमेल पता: lpsinghfm@gmail.com

प्राकृतिक खेती में रसायनों का उपयोग पूर्ण रुप से वर्जित है। ऐसे में फसलों/पेड–पौधों को रोग–कीटों से बचाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। ऐसे में कुछ जैविक पदार्थों, वानस्पतिक तथा प्राकृतिक घटकों को मिलाकर अनेक प्रभावशाली कीटनाशक/कीटरोधक, रोगनाशक/रोगरोधी उत्पाद तैयार किये गये है, जिनके प्रयोग से प्राकृतिक खेती के अन्तर्गत रोग–कीट नियंत्रण करना आसान हो गया है। कुछ प्रमुख उत्पादों का विवरण निम्नलिखित है–

रोग नियंत्रण हेतु

❖ **फफूंदनाशक (फंगीसाइड) :**

क. 100 लीटर पानी।

ख. 5 लीटर खट्टी छांछ/मटठा 3 दिन पुराना।उपरोक्त को मिलाकर छिड़काव करें। यह विषाणु नाशक है। छांछ/मट्ठा को खट बनाने के लिए ताँबे के बर्तन में या किसी अन्य बर्तन में मट्ठा रखकर उसमें बिजली में प्रयोग होने वाले ताँबे के तार रख देने से मट्ठा खट्टा हो जाता है जो अधिक प्रभावकारी होता है।

❖ **सोंठास्त्र (कवकनाशी):**

100 ग्राम सोंठ लेकर कूट लें। एक बर्तन में कूटा हुआ सोंठ को एक ली. पानी मिला के उबाले । पानी आधा बचने के बाद उतारकर ठंडा होने दें। दूसरे बर्तन में 1 ली. देशी गाय या भैंस का दूध लेकर एक उबाल तक गरम करके उतार लें। दूध ठंडा होने दे। 1 ड्रम में 100 ली. पानी भर ले। उसमें दूध एवं सोंठ का घोल डाल दे। लकड़ी से अच्छी तरह मिला लें। कपड़े से छान कर, फसलों पर छिड़काव करें। यह एक अच्छा फफूंदनाशक है।

❖ **हींग आधारित दवा (फफूंदनाशक):**

क. 5 किग्रा, गोबर।
ख. 7 ली गौ–मूत्र।
ग. 5 ली. पानी।
घ. 200 ग्राम हींग।
ङ. 150 ग्राम चूना।
च. 500 ग्राम गुड़।

बनाने की विधि : 5 किग्रा. गोबर में 5 ली. पानी, 7 ली. गौ मूत्र 500 ग्राम गुड मिला के 4 दिनों तक ढक के रखें। प्रति दिन सुबह–शाम घोल को एक लकड़ी से हिलाना हैं। 5 वें दिन घोल में 200 ग्राम हींग तथा 150 ग्राम चूना मिला के पुनः 4 दिन ढक कर रखें एवं 10 वें दिन इसे छानकर 50 ली. पानी में मिलाकर छिड़काव करें। यह एक बढ़िया कीट एवं फफूंदनाशक है।

❖ **लहसुन से दवा (फफूंदनाशक) :**

500 ग्राम लहसुन को थोड़े से पानी में मिला कर अच्छे से पेस्ट बना लें। पेस्ट को निचौड़ कर पानी निकाल कर एक डिब्बे में बंद करके रखें। उसके बाद लहसुन पेस्ट को 200 मिली मिट्टी के तेल में रात भर डुबो कर रखें। दूसरे दिन तेल को छान लें एवं इसके साथ बंद डिब्बा में जमा किया हुआ पानी मिला दें। अंत में 10 प्रतिशत साबुन पानी मिला लें। यह स्टिकी दवा है। 5 से 10 मिली दवा 1 ली. पानी में घोल में छिड़काव करें। यह लाही को नियन्त्रण करता है तथा यह एक अच्छा फफूंदनाशक भी है।

❖ **देशी गौ–मूत्र :**

एक जीवाणुनाशक, कीटाणुनाशक, विषाणुनाशक एवं संजीवक के रूप में कार्य करते है। इस में नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश एवं अन्य सूक्ष्म पोषक तत्व भी पाये जाते हैं। सफेद मक्खी नियन्त्रण के लिए भी उपयोगी है। 1 लीटर गौ–मूत्र 10 ली. पानी में मिला कर सुबह या सायं के समय छिड़काव करें।

कीट नियंत्रण हेतु

❖ **नीमास्त्र (रस चूसने वाले कीड़े, छोटी सूण्डियाँ/इल्लियाँ होने पर नियंत्रण) :**

क. 5 किग्रा. नीम की पत्ती/फल।
ख. 5 लीटर देशी गाय का गौमूत्र।
ग 1 किग्रा. देशी गाय का गोबर।
घ. 100 लीटर पानी।
नीम की पत्ती और सूखे फलों को कूटकर पानी में मिलायें तत्पश्चात् देशी गाय का गोबर और गौमूत्र मिला लें। मिश्रण को 48 घण्टे बोरे से ढककर छाया में रखें, सुबह शाम लकड़ी के डण्डे से घड़ी की सुई की दिशा में घुमायें। कपड़े से छानकर फसल पर छिड़काव करें।

❖ **ब्रह्मास्त्र (बड़ी सूण्डियाँ/इल्लियाँ होने पर नियंत्रक) :**

क. 10 लीटर गौमूत्र।
ख. 5 किग्रा. नीम की पत्तियां।
ग. 2–2 किग्रा, अमरूद, पपीता, आम, अरण्डी की चटनी।
इन वनस्पतियों की चटनी को गौमूत्र में मिलाकर धीमी आँच पर चार उबाल आने तक उबालें। इसके बाद 48 घण्टे तक ठण्डा होने के लिए रख दें। 5 लीटर घोल को 100 लीटर पानी में मिलाकर 1 एकड़ की फसल पर छिड़काव करें। घोल का प्रयोग 6 माह तक किया जा सकता है।

❖ **दशपर्णी अर्क (सभी प्रकार की सूण्डी/इल्लियों का नियंत्रण)**

- 200 लीटर पानी।
- 10 किग्रा गोबर।
- 10 लीटर गौमूत्र।
- वनस्पतियाँ–नीम/करंज/अरण्डी/सीताफल/बेल/गेंदा/तुलसी/धतूरा/आम/अमरूद/अनार/करेला/गुड हल/कनेर/अर्जुन/हल्दी/अदरक/पवाड़/पपीता इसमें से किन्हीं 10 के 2–2 किग्रा, पत्ते।
- 500 ग्राम हल्दी पाउडर।
- 500 ग्राम अदरक की चटनी।
- 10 ग्राम हींग पाउडर।
- 1 किग्रा. तम्बाकू पत्ती।
- 1 किग्रा हरी मिर्च की तीखी चटनी।
- 1 किग्रा. देशी लहसुन की चटनी।

इन सबको मिलाकर लकड़ी के डण्डे से अच्छे से घोलें, बोरी से ढककर छाया में 30–40 दिन रखें व दिन में 2 बार घोलें। इसके बाद कपड़े से छानकर इसका भण्डारण करें। 6 माह बाद इसका प्रयोग कर सकते हैं। प्रति एकड़ 200 लीटर पानी में 6 लीटर दशपर्णी अर्क मिलाकर प्रयोग करें।

❖ **अग्नि अस्त्र (रस चूसने वाले कीड़े, छोटी सूण्डियाँ/इल्लियाँ होने पर नियंत्रक)**

क. 20 लीटर देशी गाय का मूत्र।
ख. 5 किग्रा. नीम की पत्तियां।
ग. 500 ग्राम तम्बाकू पाउडर।
घ. 500 ग्राम तीखी हरी मिर्च की चटनी।
ड. 500 ग्राम देशी लहसुन की चटनी।कूटे हुए नीम के पत्ते व अन्य सामग्री गौमूत्र में मिलाकर धीमी आँच पर चार उबाल आने तक उबालें। मिश्रण को 48 घण्टे तक छाया में रखें व सुबह शाम घोलें। इसे कपड़े में छानकर 10 लीटर घोल को 100 लीटर पानी में मिलाकर 1 एकड़ की फसल पर छिड़काव करें। घोल का प्रयोग 6 माह तक किया जा सकता है।

❖ **लहसुन, अदरक एवं हरी मिर्च पेस्ट (लाही, लीफ माइनर, फल छेदक, थिप्स एवं सफेद मक्खी के नियंत्रण हेतु) बनाने की विधिः**

1. 1 किग्रा. लहसुन को 100 मिली. मिट्टी तेल में रात भर मिलाकर रखें। सुबह लहसुन को साफ करके पेस्ट बना लें।
2. अलग–अलग बर्तन में 500 ग्राम अदरक 50 मिली. पानी एवं 500 ग्राम हरा मिर्चा 50 मिली. पानी में मिला के पेस्ट बना लें।
3. तीनों पेस्ट को 100 लीटर पानी एवं 50 ग्राम डिटर्जेण्ट पाउडर में अच्छे से मिला कर छान ले एवं छिड़काव करें तथा यह मिश्रण 4 दिनों के अन्दर प्रयोग कर लें।

❖ **लेन्टेना कैमरा पत्ते की राख कीट विकर्षक दवा :**

पत्ता खाने वाले कीट जैसे रेड विविल नियंत्रण के लिए लेन्टेना कैमरा पत्ता सुखा के आग लगा कर राख बना लें एवं लत्तर एवं अन्य फसलों में सुबह या शाम को छिड़काव करें।

❖ **चना फल छेदक कीट नियंत्रण की दवा :**

क. 1 किलो0 वासक पत्ता
ख. 1 किग्रा० करंज पत्ता
दोनों प्रकार के पत्तियों को कूट कर 32 लीटर पानी में सहित एक बर्तन में भर कर उबाल लें। पानी आधा रहने पर उतार कर ठण्डा होने पर छानकर डिब्बे में भर के रखें। यह दवा 6 माह तक उपयोग कर सकते हैं।

उपयोग विधिः प्रति एक ली. पानी में 10 मिली के मात्रा में मिला के छिड़काव करें। संपूर्ण रुप से नियंत्रण के लिए 10 से 12 दिनों में दूसरा छिड़काव करें।

❖ **लाही, सफेद मक्खी, अन्य रस चुसने वाले कीट एवं फलछेदक, पत्ता खानेवाले कीड़े के नियंत्रण के लिए दवा :**

एक एक किग्रा. पुटुस पत्ता (*स्ंदजंद ंबंउंतं*), आमरी (*प्चवउवमं पिजनसवें*) पत्ता, आकद (*ब्ंसंजतवचपे चतवबमतंए ।तं*) पत्ता अच्छा से कुट एवं 48 लीटर पानी में उबाल लें। आधा पानी रहने पर उतार लें। ठंडा होने पर छान कर डब्बा में भर कर रखें। यह दवा 6 माह तक उपयोग कर सकते हैं।

उपयोग विधि : एक ली. पानी में 10 मी. ली. की मात्रा में दवा मिला कर छिड़काव करें। सम्पूर्ण रुप से नियंत्रण के लिए 10 से 12 दिनों में दूबारा छिड़काव करें।

❖ **दीमक नियंत्रण के लिए दवा :**

क. 3.5 किग्रा0 करंज पत्ता।
ख. 3 किग्रा0 नीम का पत्ता।
ग. 10 ली. पानी।

उपरोक्त को मिला कर उबाल लें। आधा पानी रहने पर उतार लें। ठंडा होने पर छानकर डब्बा में भर कर रखें। इसमें 1 लीटर कैस्टर तेल/अरण्डी तेल एवं 10 ग्राम डिटर्जेण्ट पाउडर अच्छा से मिला लें। यह दवा 6 माह तक उपयोग कर सकते हैं।

उपयोग विधि : 1 ली. पानी में 10 मिली के मात्रा में मिला कर छिड़काव करें। सम्पूर्ण रुप से नियंत्रण के लिए 10 से 12 दिनों में दूसरा छिड़काव करें।

❖ **लहसुन पानी (सभी प्रकार कीट नियन्त्रण):**

क. 200 ग्राम लहसुन।
ख. 20 ली. गौ–मूत्र।
ग. 1 बाल्टी 20 ली.।

लहसुन को चूर्ण करके गौ मूत्र में मिलाके 7 दिनों के लिए जुट बैग से ढक कर रखें। 7वें दिन में मारकीन के कपडे से छान लें। एक गुणा दवा को 10 गुणा पानी के साथ मिलाकर सायं के समय पौधों में छिड़काव करें। यह सभी प्रकार के कीट नियंत्रण के लिए उपयोगी है।

❖ **नीम तेल :** यह कीट के लिए एक शक्तिशाली विकर्षक दवा एवं भोजन विरोधी है। 50 मिली. नीम तेल 10 ली. पानी एवं 1 रू. का एक शैम्पू पैकेट अच्छे से मिला कर सायं के समय छिड़काव करें।

रोग एवं कीट दोनों से बचाव करने वाले उत्पाद

❖ **नीम पेस्ट (फल वृक्ष जैसे आम, लीची, अमरुद इत्यादि के तने को बीमारी एवं कीटों से सुरक्षित रखने हेतु) :**

क. 2.5 लीटर पानी।
ख. 1 लीटर गौ मूत्र।
ग. 1 किग्रा. गोबर।
घ. 1 किग्रा नीम का कुटा हुआ पत्ता।

उपयोग विधिः सभी को मिलाकर इम में भर कर 48 घंटे के लिए छाया में रखें। तैयार पेस्ट को एक ब्रश से आम पौधे को जमीन से 2 से 3 फीट ऊपर तक पेंट करें। एक बार मई–जून और दूसरी बार नवम्बर–दिसम्बर में करें।

❖ **हंडीकाथ/हंडी दवा (सभी प्रकार की कीट एवं बीमारी के नियंत्रण हेतु)**

क. 1 किग्रा. देशी गाय का गोबर।
ख. 4 ली. देशी गाय का मूत्र।
ग. 1–1 किग्रा. नीम की पतियां, शरीफा की पत्तियां।
घ. 1 किग्रा. करंज की पत्तियां।
ङ. 1 किग्रा. तम्बाकू पत्ता।
च. 1 किग्रा. पुटुस।
छ. 50 ग्राम गुड़।
ज. 1 मुट्ठी दीमक मिट्टी।

हांडीकाथ/हंडी दवा कैसे तैयार करें :

1. उपरोक्त सामग्री को अच्छा से कुट के मिला लें एवं मिट्टी के बर्तन में भर के सात दिन रखें।
2. सात दिन के बाद उपरोक्त सामग्री को निचोड़कर काथ निकाल लें तथा काथ को मारकिन कपड़ा से छान के डब्बा में भर के रखें।
3. 3 कपडाई सामग्री को फिर से उसी मिटटी के बर्तन में डालकर 1 लीटर देशी गाय का मूत्र बच्चे हुई रख देना है। यह काथ प्रति सप्ताह लेना एवं 1 ली. गाय का मूत्र मिलाना है। अगले छः माह तक यह हंडी दवा निकाल के उपयोग कर सकते है।
4. 100 मिली काथ को 5 ली पानी में मिलाकर खड़ी फसल में छिड़काव करें। बालक 1000 पौधा के लिए 10 ली. पानी में 100 मिली हंडी काथ मिलाना हैं। इस खाद का स्प्रे 10 से 15 दिन के अन्तराल पर किसी भी फसल में किया जा सकता हैं।
5. दवा स्प्रे के लिए 15 ली. पानी में एक रू. वाले एक पैकेट शैम्पू मिला लेना है। स्प्रे का समय–सुबह या शाम को ही स्प्रे करना चाहिए।